RNI:RJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2021-23
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2021

# शिव आमंत्रण

आध्यात्म की नई उड़ान

सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण

महा शिवरात्रि विशेष 2022

वर्ष 09 | हिन्दी (मासिक) | शिवरात्रि विशेष | पृष्ठ 4 |

## अवतरण ] परमपिता परमात्मा इस धरा पर 86 साल पहले हो चुके हैं अवतरित

# फिर ये मत कहना बताया नहीं...

### माउंट आबू में जारी है आत्मा-परमात्मा के मिलन का मंगल मेला

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि परमात्मा शिव का दिव्य अवतरण हो चुका है। **आत्मा-परमात्मा के मंगल मिलन का यह महामेला 86 वर्षों से माउंट आबू, राजस्थान की पावन धरा पर जारी भी है**। इस मंगल मिलन के गवाह लाखों ब्रह्माकुमार भाई-बहनें हैं। चूंकि परमात्मा का अपना कोई स्थूल शरीर नहीं होता, इसलिए वह परकाया प्रवेश कर प्रजापिता ब्रह्मा के तन का आधार लेकर मनुष्य आत्माओं को सहज राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं। इस शिक्षा को जीवन में धारण कर लाखों लोग अपना जीवन संयमित, संपूर्ण नशामुक्त, सात्विक बना चुके हैं। जीवन में दिव्य गुण धारण कर परमात्म शक्ति की मदद से पावन दुनिया में चलने योग्य बनने के लिए दिन-रात योग-साधना में लीन हैं। परमात्म मिलन की ये सुनहरी घड़ियां अब अपनी पूर्णतः की ओर हैं। मनुष्य का गिरता निम्नस्तर और प्रकृति के पांचों तत्व भी अति की ओर बढ़ रहे हैं और बदलाव का संकेत दे रहे हैं। ब्रह्माकुमारीज़ परिवार आप सभी से आग्रह करता है कि इस दुनिया के सबसे बड़े सत्य को जानकर, परमात्मा को पहचानें और उनसे मंगल मिलन मनाने का सौभाग्य प्राप्त करें, ताकि फिर आप यह न कह सकें कि बताया नहीं। परमपिता शिव परमात्मा के दिव्य अवतरण, उनके कार्य और नई दुनिया की स्थापना को लेकर प्रस्तुत है **शिव आमंत्रण** का एक विवरण...

### वर्तमान कलियुग का सारा काल ही महारात्रि

वर्तमान समय कलियुग का अंतिम चरण चल रहा है, यह सारा काल, रात्रि अथवा महारात्रि ही है। हम सभी नर-नारियों को यह शुभ संदेश देना चाहते हैं कि अब परमपिता परमात्मा शिव संसार को पावन तथा सुखी बनाने के लिए फिर से प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित होकर सहज राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं। अतः हम सबका कर्त्तव्य है कि उनकी आज्ञानुसार नैष्ठिक पवित्रता और शुद्धता का पालन करें और शिव पर अर्पण होकर संसार की ज्ञान सेवा करें। वास्तव में यही सच्चा पाशुपति व्रत है। इसका फल मुक्ति और जीवन-मुक्ति की प्राप्ति माना गया है। अब मनुष्यों को चाहिए कि विकारों रूपी विष से नाता तोड़कर परमात्मा शिव से अपना नाता जोड़ें।

**1937**
से जारी है आत्मा-परमात्मा का महामिलन

**12 लाख**
लोग बने इस महामिलन के साक्षी

**50 हजार**
ब्रह्माकुमारी बहनें समर्पित रूप से इस दिव्य कार्य में जुटीं

### चारों युगों में एक बार होता है सर्वोच्च सत्ता का अवतरण

चारों युगों में एक बार ही इस सृष्टि पर परमात्मा का अवतरण होता है। जब यह दुनिया पतित भ्रष्टाचारी बन जाती है। आसुरीयता का बोलबाला हो जाता है। ऐसे समय में परमात्मा को इस सृष्टि पर आकर पुनः नई दुनिया की स्थापना का महान कार्य करना पड़ता है। जब दुनिया भौतिकता की चकाचौंध में इतनी डूब जाती है कि उसके ज्ञान नेत्र बंद हो जाने के कारण सत्य और असत्य का कुछ पता ही नहीं चलता है। तब परमात्मा आकर अपने बच्चों को स्वयं की एवं अपनी पहचान बताते हैं।

- राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़, माउंट आबू

## शिव कौन हैं?

भारत देश 33 करोड़ देवी देवताओं का देश है। परन्तु इन सभी देवताओं को बनाने वाले एक ही परमपिता परमात्मा शिव हैं। परमात्मा शिव देवों के भी देव महादेव, ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के भी रचयिता त्रिमूर्ति, तीनों लोकों के मालिक त्रिलोकीनाथ, तीनों कालों को जानने वाले त्रिकालदर्शी हैं। परमात्मा जन्ममरण से न्यारे हैं। उनका जन्म नहीं होता बल्कि परकाया प्रवेश होता है। परमपिता शिव अजन्मा हैं, अभोक्ता, ज्ञान के सागर, आनंद के सागर, प्रेम के सागर, सुख के सागर हैं। उनका स्वरूप ज्योतिर्बिन्दु है। परमधाम के निवासी हैं। शिव का अर्थ ही है 'कल्याणकारी'। परमात्मा शरीरधारी नहीं है। इसका मतलब ये नहीं कि उनका कोई आकार नहीं। बल्कि स्थूल आंखों से न दिखने वाला सूक्ष्म ज्योति स्वरूप है। परमात्मा शिव को सभी ग्रंथों, पुराणों और वेदों में भी सर्वोपरी ईश्वर माना गया हैं।

शेष पेज 2 पर...

# सभी धर्मों ने स्वीकारी परमपिता परमात्मा की सत्ता

**परमपिता परमात्मा को विश्वभर की मनुष्य आत्माओं ने किसी न किसी रूप में स्वीकार किया है। वह सर्वमान्य और सर्वज्ञ हैं। सर्वशक्तिमान और निर्वैर हैं। वही ज्योतिपुंज, ज्योतिर्लिंग हैं। ऐसे ही देवों के भी देव महादेव परमात्मा शिव हैं।**

विश्व के प्रायः सभी धर्मों के लोग परमात्मा के अस्तित्व में विश्वास करते हैं। सभी मानते हैं कि परमात्मा एक है। सभी धर्मों में सर्वशक्तिमान परमात्मा के बारे में एक बात सर्वमान्य है, वह यह कि परमात्मा ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप हैं। इस संबंध में केवल भाषा के स्तर पर ही मतभेद हैं, स्वरूप के संबंध में नहीं। शिवलिंग का कोई शारीरिक रूप नहीं है क्योंकि यह परमात्मा का ही स्मरण चिंह्न है। शिव का शाब्दिक अर्थ है 'कल्याणकारी' और लिंग का अर्थ है प्रतिमा अथवा चिंह्न। अतः शिवलिंग का अर्थ हुआ कल्याणकारी परपपिता परमात्मा की प्रतिमा। प्राचीन काल में शिवलिंग हीरों (जो कि प्राकृतिक रूप से ही प्रकाशवान् होते हैं) के बनाए जाते थे, क्योंकि परमात्मा का रूप ज्योतिर्बिन्दु है। सोमनाथ के मंदिर में सर्व प्रथम संसार के सर्वोत्तम हीरे कोहिनूर से बने शिवलिंग की स्थापना हुई थी। विभिन्न धर्मों में भी परमात्मा को इसी आकार में मान्यता दी गई है। चाहे वे पत्थर, हीरों अथवा अन्य धातुओं की स्थायी रूप में मूर्तियां स्थापित न भी करें, लेकिन फिर भी पूजा-पाठ, प्रार्थना में दीपक अथवा ज्योति को अवश्य जलाते हैं।

## सबसे बड़ा सत्य अज्ञानता रूपी रात्रि में अवतरित होते हैं परमात्मा
## शंकरजी के भी परमपिता परमात्मा हैं 'शिव'

शिव और शंकर में महान अंतर है। शिवलिंग परमात्मा शिव की प्रतिमा है। परमात्मा निराकार ज्योति स्वरूप हैं। शिव का अर्थ है कल्याणकारी और लिंग का अर्थ है चिंह्न। अर्थात् कल्याणकारी परमात्मा को साकार में पूजने के लिए शिवलिंग का निर्माण किया गया। शिवलिंग को काला इसलिए दिखाया गया क्योंकि अज्ञानता रूपी रात्रि में परमात्मा अवतरित होकर अज्ञान-अंधकार मिटाते हैं। परमपिता परमात्मा शिव देवताओं एवं समस्त मनुष्यात्माओं के पिता हैं। उनका दिव्य अवतरण होता है। वे अजन्मा, अभोक्ता, अकर्ता और ब्रह्मलोक के निवासी हैं। शिव और शंकर में उतना ही अंतर है जितना कि पिता और पुत्र में। शंकर का आकारी शरीर है। शंकर, परमात्मा शिव की रचना हैं। परमात्मा शिव ने शंकर को इस कलियुगी सृष्टि के विनाश के लिए रचना की है। यही वजह है कि शंकर हमेशा शिवलिंग के सामने तपस्या करते हुए दिखाए जाते हैं। वह हमेशा ध्यान की मुद्रा में रहते हैं। यदि शंकर स्वयं भगवान होते तो उन्हें ध्यान करने की क्या जरूरत है? ध्यानमग्न शंकर की भाव-भंगिमाएं एक तपस्वी के अलंकारी रूप हैं। शंकर और शिव को एक समझ लेने के कारण हम परमात्म प्राप्तियों से वंचित रहे। अब पुनः अपना भाग्य बनाने का मौका है।

### श्रीराम ने भी की पूजा

परमात्मा शिव की पूजा स्वयं श्रीराम ने भी की है, जो वर्तमान समय में रामेश्वरम के रूप में पूजा जाता है। परमात्मा शिव, श्रीराम के भी आराध्य हैं। यदि श्रीराम भगवान होते तो उन्हें ज्योतिर्लिंगम की पूजा करने की क्या आवश्यकता हुई? वह जानते थे रावण को अपनी जिस शक्ति का अभिमान है वह उसने परमात्मा शिव की तपस्या करके ही प्राप्त की थी। उससे मुकाबला करने के लिए शिव की शक्ति से ही विजयी हो सकते हैं।

### शंकर भी लगाते हैं ध्यान

हम शंकरजी को हमेशा ध्यान की मुद्रा में देखते हैं। इससे स्पष्ट है उनके भी कोई आराध्य या देव हैं, जिनका वह स्मरण करते रहते हैं। परमात्मा शिव, शंकर के भी रचयिता हैं। वह शंकर द्वारा इस आसुरी सृष्टि का विनाश कराते हैं। शंकर जी की ध्यान मुद्रा में योग की वह अवस्था बताई है। अर्धनेत्र खुले और अर्ध पद्मासन या सुखासन का आसन, जिसमें वह निराकार परमात्मा का ध्यान लगाते हैं।

### श्रीकृष्ण ने भी पूजा

महाभारत युद्ध के पहले कुरुक्षेत्र के मैदान में श्रीकृष्ण ने भी ज्ञानेश्वर, सर्वेश्वर की स्थापना कर उस परमपिता, सर्वशक्तिवान, निराकार शिव की पूजा-अर्चना की और उस शक्तियों के दाता से शक्ति प्राप्त कर युद्ध के मैदान में उतरे। श्रीकृष्ण ने पांडवों से भी शिव की पूजा करवाई। इसके बाद वह युद्ध के मैदान में उतरे और कौरवों पर विजय प्राप्त की। शिव को भोलेनाथ भी कहा गया है, क्योंकि वह सहज ही प्रसन्न होने वाले हैं।

### एक ओंकार निराकार

सिख धर्म में गुरुनानक देवजी ने कहा है 'एक ओंकार निराकार'। उन्होंने बड़े स्पष्ट शब्दों में परमात्मा के सत्य स्वरूप का वर्णन किया है। 'वो निराकार है, निर्वैर है, सतनाम् है' जिसको काल कभी नहीं खा सकता। यह सब महिमा गुरुवाणी में लिखी हुई है। हमने ज्योतिर्लिंगम कहा उन्होंने निराकार, निर्वैर, सत्यनाम कहा। गुरुनानक देव जी को हमेशा ऊपर की तरफ अंगुली करते दिखाया गया है।

### गॉड इज लाइट

जीजस ने परमात्मा को लाइट कहा। उन्होंने कहा 'गॉड इज लाइट', आई एम द सन् ऑफ गॉड। आज भी चर्च में एक बड़ी मोमबत्ती जलाते हैं जो परम ज्योति परमात्मा का ही सूचक है।

### अल्लाह को कहा- नूर

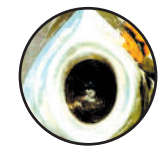

मुस्लिम धर्म में मान्यता है कि जीवन में एक बार मक्का मदीना की यात्रा अवश्य करनी चाहिए। इस पवित्र पत्थर का दर्शन मुसलमानों के लिए आवश्यक माना गया है। वो भी निराकार है, जिसकी कोई साकार आकृति नहीं है। उसको ही संग-ए-असवद और अल्लाह कहा। उसे वह लोग नूर-ए-इलाही भी कहते हैं। नूर-ए-इलाही अर्थात् वो नूर, वो तेज, वो तेजोमय स्वरूप जिसको हमने ज्योतिर्लिंगम वा ज्योतिस्वरूप कहा है। ज्योति माना ही तेज।

अतः सभी धर्मों ने किसी न किसी रूप मे उस परमसत्ता की शक्ति को स्वीकारा है। इसके अलावा विश्वभर के सभी वेद-शास्त्रों, उपनिषद, ग्रंथ आदि सभी में कहीं न कहीं परमात्मा के ज्योति स्वरूप की व्याख्या की है। वही त्रिलोकीनाथ, तीनों लोकों के ज्ञाता परमपिता परमेश्वर परमात्मा शिव हैं।

### शिव के साथ क्या है रात्रि का संबंध...?

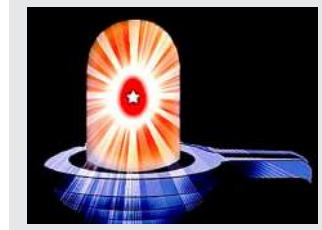

विश्व की सभी महान विभूतियों के जन्मोत्सव मनाए जाते हैं, लेकिन परमात्मा शिव की जयंती को जन्मदिन न कहकर शिवरात्रि कहा जाता है, आखिर क्यों? इसका अर्थ है परमात्मा जन्ममरण से न्यारे हैं। उनका किसी महापुरुष या देवता की तरह शारीरिक जन्म नहीं होता है। वह अलौकिक जन्म लेकर अवतरित होते हैं। उनकी जयंती कर्त्तव्य वाचक रूप से मनाई जाती है। जब- जब इस सृष्टि पर पाप की अति, धर्म की ग्लानि होती है और पूरी दुनिया दुःखों से घिर जाती है तो गीता में किए अपने वायदे अनुसार परमात्मा इस धरा पर अवतरित होते हैं।

### रोम में शिवलिंग को कहा जाता है 'प्रियपस'...

पारसियों के अग्यारी में होली फायर मिलता है। पारसी जब भारत आए तो जलती हुई अग्नि का अंश लेकर आए। वह आज भी जब नई अग्यारी की स्थापना करते हैं तो जलती हुई ज्योत का अंश स्थापन करते हैं, जो परमज्योति का प्रतीक है। मिस्र में शिव की पूजा सेवा व फैजी देश में शिव को सेवा या सेवाजिया नाम से पूजते हैं। रोम में शिवलिंग को प्रियपस कहा जाता है।

### शिवलिंग पर तीन रेखाएं ही क्यों...?

शिवलिंग पर तीन रेखाएं परमात्मा द्वारा रचे गए तीन देवताओं की ही प्रतीक हैं। परमात्मा शिव तीनों लोकों के स्वामी हैं। तीन पत्तों का बेलपत्र और तीन रेखाएं परमात्मा के ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के भी रचयिता होने का प्रतीक हैं। वे प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा सतयुगी दैवी सृष्टि की स्थापना, विष्णु द्वारा पालना और शंकर द्वारा कलियुगी आसुरी सृष्टि का विनाश कराते हैं।

## परमात्मा की पहचान के लिए मुख्य पांच बातें

सर्वमान्य: परमात्मा एक और सत्य हैं। परमात्मा उन्हें कहा जाएगा जो सर्वमान्य हों और सभी धर्मों की आत्माएं स्वीकार करें। वह सर्व धर्मों की आत्माओं के परमपिता हैं। उन्हें अलग-अलग भाषाओं और धर्मों में अलग-अलग नामों से याद किया जाता है। जैसे- परमेश्वर, ईश्वर, ओंकार, अल्लाह, खुदा, गॉड, नूर इत्यादि उसके ही नाम हैं।

सर्वोच्च: परमात्मा उसे कहेंगे जो सर्वोच्च, सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम और परम हों यानी उसके ऊपर कोई नहीं हो।

परमात्मा का कोई माता-पिता, शिक्षक, गुरु या रक्षक नहीं है। बल्कि वे ही सर्व आत्माओं के परमपिता, परमशिक्षक, परम सत्गुरु और परम रक्षक हैं।

सबसे न्यारा: परमात्मा जन्म-मरण, कर्म-फल, पाप-पुण्य, सुख- दुःख से न्यारे और सर्व प्राकृतिक बंधनों से मुक्त हैं।

सर्वज्ञ: परमात्मा ही सर्वज्ञ अर्थात् इस सृष्टि का आदि-अंत जानते हैं। वही रचनाकार और पालनहा हैं। मुक्ति और जीवनमुक्ति के दाता हैं।

शक्तियों का भंडार: परमात्मा सर्व गुणों और शक्तियों का भंडार हैं। वह सागर या सूर्य के समान अपने गुणों और शक्तियों को विश्व की सर्व आत्माओं को देकर उनका कल्याण करते हैं।

## तीन लोकः स्थूल लोक, सूक्ष्म लोक, ब्रह्मलोक

स्थूल लोक: इस सृष्टि में तीन लोक होते हैं। पहला स्थूल वतन, दूसरा सूक्ष्म वतन और तीसरा मूल वतन अर्थात् परमधाम (ब्रह्मलोक, शांतिधाम या निर्वाणधाम) मनुष्य सृष्टि अथवा स्थूल लोक जिसमें हम निवास करते हैं। इसे कर्म क्षेत्र भी कहते हैं।

सूक्ष्म लोक: सूर्य-चांद से भी पार एक अति सूक्ष्म लोक है। इसमें पहले सफेद रंग के प्रकाश तत्व में ब्रह्मापुरी, उसके ऊपर सुनहरे लाल प्रकाश में विष्णुपुरी और उसके भी

पार शंकरपुरी है। इन तीनों देवताओं की पुरियों को संयुक्त रूप से सूक्ष्म लोक कहते हैं।

ब्रह्मलोक: सूक्ष्म लोक से भी ऊपर एक असीमित तेज सुनहरे लाल रंग का प्रकाश है, इसे अखंड ज्योति ब्रह्म तत्व कहते हैं। ज्योतिर्बिन्दु त्रिमूर्ति परमपिता परमात्मा शिव और सभी धर्मों की आत्माएं इसी लोक में निवास करती हैं। इसे ब्रह्मलोक, परमधाम, शांतिधाम, निर्वाणधाम, मोक्षधाम अथवा शिवपुरी कहा जाता है। परमात्मा ही 33 करोड़ देवी-देवताओं के रचनाकार, ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के भी रचयिता त्रिमूर्ति, तीनों लोकों के मालिक त्रिलोकीनाथ, जानी-जाननहार और सृष्टि के नियंता हैं।

दिव्य अवतरण ] धर्म-ग्रंथों में भी परमात्मा के दिव्य अवतरण का मिलता है उल्लेख

# अवजानन्ति मां मूढ़ा मानुषीं तनुमाश्रितम् परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम्

## गीता, महाभारत, रामायण, शिव पुराण और मनुस्मृति में भी है परमात्मा के दिव्य अवतरण का उल्लेख

**परमात्मा ने गीता में नौवें अध्याय 11वें श्लोक में कहा है कि मनुष्य तन का आश्रय लेने वाले मुझको मूढ़मति लोग नहीं जानते। यद्यपि मैं महेश्वर (परमात्मा) हूँ तो भी व्यक्त भाव वाले वे लोग मुझे नहीं पहचान सकते।**

यजुर्वेद (32/2) का वचन है कि सर्वे निमेषा जज्ञिरे विद्युत पुरूषाधि, अर्थात् वह विद्युत पुरूष ज्योतिर्लिंग प्रगट हुआ जिससे निमेष जज्ञिरे विद्युत पूरूषादधि अर्थात् वह विद्युत पुरूष प्रगट हुआ जिससे निमेष कला का आदि का प्रारम्भ हुआ।

**शमो दमस्तपः शौचं**
**क्षान्तिरार्जवमेव च।**
**ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं**
**ब्रह्मकर्म स्वभावजम्।।**

(43)।। (अष्टादश अध्याय) गीता भावार्थः मन का शमन, इन्द्रियों का दमन, पूर्ण पवित्रता, मन-वाणी और शरीर को इष्ट के अनुरूप तपाना, क्षमाभाव, मन, इंद्रियों और शरीर की सर्वथा सरलता, आस्तिक बुद्धि अर्थात् एक इष्ट में सच्ची आस्था, ज्ञान अर्थात् परमात्मा की जानकारी का संचार, विज्ञान अर्थात् परमात्मा से मिलने वाले निर्देशों की जागृति एवं उसके अनुसार चलने की क्षमता, यह सब स्वभाव से उत्पन्न हुए ब्राह्मण के कर्म हैं अर्थात् जब स्वभाव में यह योग्यताएं पाई जाएं, कर्म धारावाही होकर स्वभाव में ढल जाए तो वह ब्राह्मण श्रेणी का कर्त्ता है।

### एक ज्योति ने की नवयुग की स्थापना-

महाभारत में भी लिखा है कि सबसे पहले जब यह सृष्टि तमोगुण और अंधकार से आच्छादित थी तब एक अण्डाकार ज्योति प्रकट हुई और वह ज्योतिर्लिंग ही नए युग की स्थापना के निमित्त बना। उसने कुछ शब्द कहे और प्रजापिता ब्रह्मा को अलौकिक रीति से जन्म दिया। महाभारत के शांतिपर्व श्लोक संख्या 337-24-25 में लिखा है कि 'भगवान ने नई सृष्टि की रचना के लिए ब्रह्मा की बुद्धि में प्रवेश किया'। उन्हें ज्ञान देकर अपने जैसे अन्य दिव्य आत्माओं को तैयार करने की जिम्मेदारी सौंपी।

### वह बिना पैर के चलता है...

**बिनु पद चलई सुनई बिनु काना। कर बिनु करम करई विधि नाना। आनन रहित सकल रस भोगी। बिनु बानी बकता बड़ जोगी।**
**(शिव के लिए)।।**

वह निराकार परमात्मा (ब्रह्मलोक निवासी) बिना ही पैर के चलता है, बिना कान के सुनता है, बिना हाथ के नाना प्रकार के काम करता है। फिर भी हजारों भुजा वाला है, बिना मुंह के ही सारे (छहों) रसों का आनंद लेता है और बिना वाणी के बहुत योग्य वक्ता है। वही हमारा परमात्मा राम है।

### जो हजारों सूर्य के समान तेजस्वी है

मनुस्मृति में भी यही लिखा है कि सृष्टि के आरंभ में एक अंड प्रकट हुआ, जो हजारों सूर्य के समान तेजस्वी और प्रकाशमान था। इसी प्रकार शिवपुराण में धर्मसंहिता में लिखा है कि कलियुग के अंत में प्रलय काल में एक अद्भुत ज्योतिर्लिंग प्रकट हुआ जो कि कालाग्नि के समान ज्वालामान था। वह न घटता था और न बढ़ता था, वह अनुपम था और उस द्वारा ही सृष्टि का आरंभ हुआ। इस तरह हम देखते हैं कि भारत के सभी वेद-ग्रंथों में परमात्मा के अवतरण की बात कहीं गई है। कहीं उसकी व्याख्या ज्योति तो कहीं सूर्य से भी प्रकाशमान ज्योति के रूप में की गई है।

### गीता में लिखा है- 'मेरा जन्म दिव्य और अलौकिक है'

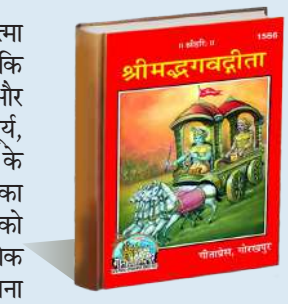


गीता में परमात्मा ने कहा है कि 'मेरा जन्म दिव्य और अलौकिक है। मैं सूर्य, चांद और तारागण के भी पार परमधाम का वासी हूं। मैं प्रकृति को वश करके इस लोक में धर्म की स्थापना करने और प्रायः लुप्त हुआ ज्ञान सुनाने आता हूं। **वत्स! तू मन को मुझमें लगा। मैं तुझे सब पापों से मुक्त करुंगा, मैं तुम्हें परमधाम ले चलूंगा'** चूंकि परमात्मा गीता में किए अपने वायदे अनुसार साधारण मनुष्य तन का आधार लेकर नई सृष्टि की स्थापना की आधारशिला रखते हैं। इस दिव्य कार्य में भागीरथी बनने पर वह उन्हें दिव्य कर्तव्यवाचक नाम प्रजापिता ब्रह्मा देते हैं। उनके मुख से अपने अवतरण और राजयोग की शिक्षा देते हैं। परमात्मा ने गीता में साफ कहा है कि हे! मानव तू एक जन्म मेरे बताए मार्ग पर चलकर अपने मन को मुझमें लगा तो मैं तुम्हें जन्म-जन्म के पापों से मुक्त कर दूंगा।

### मैं ब्रह्मा के ललाट से प्रकट होऊंगा...

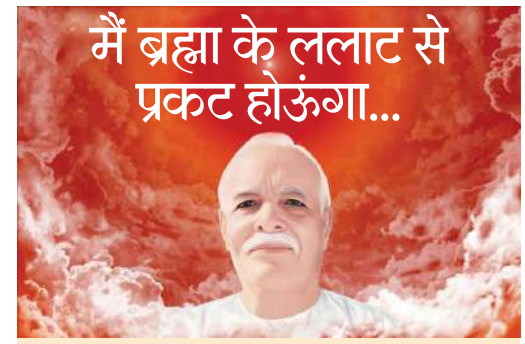

ये वाक्य शिवपुराण में कोटि रुद्र संहिता के 42वें अध्याय में लिखा है। शिव पुराण में लिखा है कि भगवान शिव ने कहा- **मैं ब्रह्माजी के ललाट से प्रकट होऊंगा।** इस कथन के अनुसार समस्त संसार पर अनुग्रह करने के लिए शिव ब्रह्माजी के ललाट से प्रकट हुए और उनका नाम रूद्र हुआ। शिव ने ब्रह्मा मुख द्वारा सृष्टि रची। शिवपुराण में अनेक बार यह उल्लेख आया है कि **भगवान शिव ने पहले प्रजापिता ब्रह्मा को रचा और फिर उनके द्वारा सतयुगी सृष्टि की स्थापना की।**

प्रकृति असंतुलन | प्रकृति के पांचों तत्वों में बढ़ रहा असंतुलन कर रहे परिवर्तन का इशारा

# तेजी से बदल रहा दुनिया का परिदृश्य

सृष्टि का शाश्वत नियम है कि कोई भी चीज हमेशा अपने मूल स्वरूप में नहीं रहती है। बदलाव या परिवर्तन प्रकृति का नियम है। जैसे- दिन के बाद रात और रात के बाद दिन का आना तय है, उसी तरह सृष्टि चक्र में सतयुग के बाद त्रेतायुग, द्वापरयुग और फिर कलियुग क्रम से आना तय है। चाहे प्रकृति का बिगड़ता संतुलन हो या समाज से विलुप्त होतीं मानवीय संवेदनाएं और गिरता नैतिक चरित्र, कहीं न कहीं विश्व परिवर्तन का स्पष्ट इशारा कर रही हैं। समय रहते इसे गंभीरता से समझने की जरूरत है। क्योंकि यह बदलाव ईश्वरीय संविधान का हिस्सा है, जो मानव के हित में है। धर्मग्लानि के जो चिंह्न शास्त्रों में बताए गए हैं वर्तमान में दुनिया की स्थिति उससे भी दयनीय और गंभीर हो गई है। मनुष्य का नैतिक और चारित्रिक रूप से इतना पतन हो चुका है कि ऐसे कार्यों का तो शास्त्रों, वेद-ग्रंथों तक में उल्लेख नहीं है।

### प्रकृति भी दे रही है परिवर्तन का संकेत

सृष्टि के आदि में प्रकृति अपने मूल स्वरूप में थी। सतोप्रधान थी। हर तत्व सुखदायी था। समय के साथ प्रकृति भी बदलती गई। उसके पांचों तत्वों में मानवीय दोहन से विकृत होना शुरू हो गया। आज असमय ही बाढ़, भूकंप, तूफान, आगजनी आम बात हो गई है। ये सभी बातें प्रकृति के बदलाव अर्थात् परिवर्तन की ओर संकेत कर रही हैं। संहार के बाद नवसृजन सृष्टि चक्र का नियम है। आज स्थिति यह है कि बड़े महानगरों में शुद्ध पेयजल तक का अभाव होने लगा है। शुद्ध ऑक्सीजन की कमी होने लगी है। जंगल और पेड़ों की संख्या दिनोंदिन घट रही है, उस अनुपात में पौधारोपण न के बराबर हो रहा है। कार्बन उत्सर्जन से वायु प्रदूषण में भी तेजी से बढ़ोतरी हो रही है। उर्वरकों के प्रयोग से मिट्टी की उर्वरा शक्ति घट रही है। धरती का तापमान तेजी से बढ़ रहा है। वर्षा ऋतु कम हो रही है या असमय 12 महीने कभी भी बारिश हो जाती है। सारी चीजें अति की ओर बढ़ रही हैं।

### परमाणु बम बनाम विश्व शांति...?

साइंस ने जहां जीवन को आसान बना दिया है वहीं परमाणु बम, मिसाइल, रॉकेट की फौज ने दुनिया को मौत के मुहाने पर खड़ा कर दिया है। एक तरफ तमाम देश परमाणु शक्ति बढ़ाने में लगे हैं और दूसरी ओर विश्व शांति की बात कर रहे हैं। एक साथ दोनों कैसे संभव हैं? ऐसे में विश्व शांति की राह ही एकमात्र उपाए है। विश्व के लिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने अंदर शांति के गुण को धारण करना होगा।

### मानवीय मूल्यों का पतन और पुनर्स्थापना की तैयारी

व्यक्ति के कर्म इतने निम्न स्तर पर पहुंच गए हैं जिनकी कभी कल्पना नहीं की होगी। धर्मशास्त्रों में धर्मग्लानि के जो चिंह्न बताए गए हैं उससे भी निम्न दर्जे की घटनाएं सामने आ रही हैं, जिसने हमारे मानव होने पर ही प्रश्न चिंह्न लगा दिया है। सृष्टि के विनाश और नवयुग के सृजन का ये वही संधि काल संगमयुग चल रहा है।

### शिवलिंग शिव के निराकार स्वरूप का प्रतीक

(विद्येश्वर संहिता... अध्याय 5-8)

भगवान शिव ही ब्रह्मरूप होने के कारण निष्कल (निराकार) कहे गए हैं। रूपवान होने के कारण उन्हें सकल भी कहा गया है। इसलिए वे सकल और निष्कल दोनों हैं। शिव के निष्कल निराकार होने के कारण ही उनकी पूजा का आधारभूत लिंग भी निराकार ही प्राप्त हुआ है अर्थात् शिवलिंग शिव के निराकार स्वरूप का प्रतीक है। इसी प्रकार शिव के सकल या साकार होने के कारण उनकी पूजा का आधारभूत विग्रह साकार प्राप्त होता है अर्थात् शिव का साकार विग्रह उनके साकार स्वरूप का प्रतीक होता है। सकल और अकल रूप होने से ही वे ब्रह्म शब्द से कहे जाने वाले परमात्मा हैं। यही कारण है कि सब लोग लिंग (निराकार) और मूर्ति (साकार) दोनों में सदा भगवान शिव की पूजा करते हैं।

अब शिव आमंत्रण एप भी

आध्यात्मिक जगत की प्रतिष्ठित पत्रिका 'शिव आमंत्रण' अब आपके हाथों में, अपने मोबाइल के QR Code Scanner से अभी इंस्टॉल करें और जाने अपडेट समाचार...

परमपिता परमात्मा से मंगल मिलन मनाते हजारों ब्रह्मा वत्स

**ब्रह्माकुमारीज़ ] एक अद्भुत और अनोखा विश्व विद्यालय जहां लिखी जा रही नई दुनिया की 'पटकथा'**

# नई दुनिया का हिस्सा बनने के लिए लाखों लोगों ने अपनाया ज्ञान-योग, सेवा-धारणा का मार्ग

**50 हजार से ज्यादा ब्रह्माकुमारी बहनों ने विश्व बदलाव के लिए अपना जीवन सेवा में अर्पण किया**

दुनिया का एकमात्र अनोखा और अद्भुत विश्व विद्यालय जहां नई दुनिया की पटकथा लिखी जा रही है। वह भी गुपचुप तरीके से । इस कार्य को पूरे 86 वर्ष भी बीत गए हैं। ब्रह्माकुमारी विश्व विद्यालय दुनिया का ऐसा विद्यालय है जहां न उम्र का बंधन है, न जाति भेद, मजहब की दीवारें। इन सबसे परे यहां वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को चरितार्थ किया जा रहा है। ज्ञान, योग, सेवा और धारणा इस विद्यालय के मुख्य सब्जेक्ट हैं जिन्हें जीवन में धारण करते हुए आज इस कारवां से 12 लाख से अधिक लोग जुड़कर संयमित जीवन जी रहे हैं। पूरी तरह से नशामुक्त ये ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी समाज में नजीर बने हुए हैं। पवित्रता के व्रत के साथ संयमित जीवन और परमात्म शक्ति इनका हरदम हौसला बढ़ाती है।

## वर्ष 1936 में दादा लेखराज के लिए परमात्मा ने कराए दिव्य साक्षात्कार

सन् 1937 में हीरे-जवाहरात के प्रसिद्ध व्यापारी दादा लेखराज के तन को परमपिता शिव परमात्मा ने अपने अवतरण का आधार बनाया। हैदराबाद सिंध (अभी पाकिस्तान में) में इस मिलन का एक छोटे स्तर से प्रारंभ हुआ। क्योंकि तब परमात्मा को एक ऐसे सशक्त संगठन की जरूरत थी जिससे लोगों को यह एहसास हो सके यह कोई साधारण नहीं बल्कि परमात्मा की शिव शक्ति सेना है। चूंकि परमात्मा को भारत और वंदे मातरम् की गाथा को भी चरितार्थ करना था, इसलिए माताओं-बहनों के सिर पर ज्ञान का कलश रखा और उन्हें इस महाभियान में अग्रणी बनाया।

## ब्रह्मा वत्सों से 14 वर्ष तक कराई कठिन तपस्या...

परमात्मा तो जानी जाननहार है, इसलिए उन्होंने ब्रह्मा वत्सों की भविष्य की स्थिति को शक्तिशाली और परमात्मा के अवतरण को पुख्ता करते हुए 14 वर्ष तक घोर तपस्या कराई। संस्था के प्रारंभ में जुड़ने वाली अधिकतर माताएं- बहनें और कुछ भाई 14 वर्ष तक घर से बाहर नहीं निकले। उनके सामने एक ही लक्ष्य था खुद को राजयोग साधना में तपाना। यह तपस्वी ज्ञान-योग में तपकर परिपक्व और इतने शक्तिशाली बन गए कि आज उनके तप व त्याग की शक्ति दूसरों को भी आध्यात्म और परमात्म मिलन के पथ पर अग्रसर कर रही है।

परमात्मा शिव स्वयं सिखा रहे हैं

## राजयोग

राजयोग को योगों का राजा कहा जाता है। इसमें सभी योगों का सार समाया हुआ है। राजयोग अंतर्जगत की एक यात्रा है। इसके माध्यम से हम अपने विचारों को एक सकारात्मक चिंतन की ओर ले जाते हैं और श्रेष्ठ दिशा देते हैं।

चिंतन श्रेष्ठ होने से मन की कार्यकुशलता बढ़ जाती है और कर्मों में प्रवीणता आने लगती है। एक अेयास के बाद हमें जीवन जीने की श्रेष्ठ कला मिल जाती है। राजयोग आत्मदर्शन और परमपिता परमात्मा से संवाद कराकर राजाई पद दिलाने वाला सर्वश्रेष्ठ योग है।

## संस्था हर क्षेत्र में निभा रही जिम्मेदारी

ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सामाजिक जिम्मेदारी के तहत भी कई अभियान चलाए जा रहे हैं। किसानों के लिए देशव्यापी अभियान शाश्वत जैविक-यौगिक खेती, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, युवा जागृति, महिला सशक्तिकरण, नशामुक्ति, स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण, आदि अभियान चलाए जा रहे हैं। देशभर के कई विश्वविद्यालयों के साथ मिलकर युवाओं के लिए मूल्यनिष्ठ शिक्षा पाठ्यक्रम कोर्स चलाए जा रहे हैं। संस्थान को संयुक्त राष्ट्र संघ के गैर सरकारी शांतिदूत सलाहकर संगठन के रूप में भी मान्यता प्राप्त है।

## परमात्मा ने स्वयं दिया था अपना परिचय

वर्ष 1936 की बात है दादा लेखराज एक दिन वाराणसी में अपने मित्र के यहां गए थे। वहां उन्हें रात्रि में अचानक इस दुनिया के भयंकर महाविनाश का साक्षात्कार होने लगा। ऐसे विनाशक हथियारों का साक्षात्कार हुआ जो उस समय इसकी परिकल्पना तक नहीं थी। इसके बाद नई दुनिया की स्थापना के लिए आसमान से उतरते देवी-देवताओं का भी साक्षात्कार हुआ। दादा लेखराज को यह बात समझ नहीं आई। जब दादा अपने घर पहुंचे और अपने कमरे में बैठे थे तो उनके अंदर निराकार परमपिता परमात्मा ने प्रवेश कर साक्षात्कार कराया। साथ ही स्वयं परमात्मा ने अपना परिचय दिया -

निजानंद् स्वरूपम् शिवोहम्,शिवोहम्।
आनंद स्वरूपम् शिवोहम्, शिवोहम्।
प्रकाश स्वरूपम् शिवोहम् शिवोहम्।

इस परिचय के साथ स्वयं परमपिता परमात्मा ने यह आदेश दिया कि अब तुम्हें एक नई दुनिया बनानी है। यही से शुरू हुआ परमपिता परमात्मा के दुनिया बदलाव का गुप्त कार्य जो आज तक अनवरत चल रहा है।

### पिछले 86 वर्ष से जारी है मिलन...

पूरी दुनिया में केवल एक ही ऐसी जगह है जहां आत्मा-परमात्मा के मिलन का साक्षात् महाकुम्भ होता है। यह सच है, यह मिलन पिछले 86 वर्षों से लगातार जारी है। ज्ञान की गंगा में ज्ञान स्नान कर वे सभी लोग देवत्व की राह पर चल पड़े हैं। इस महामिलन के साक्षी किसी भी भाई-बहन से पूछें तो सभी का एक ही उत्तर मिलता है, नर से नारायण व नारी से लक्ष्मी बनना है। इतना ऊंचा मुकाम है, फिर भी इसकी सफलता उनके नयनों में साफ झलक जाएगी। उनकी सोच और कर्मों में दैवीगुण स्पष्ट मिल जाएंगे।

## 1950 में संस्था का माउंट आबू में हुआ स्थानांतरण

भारत-पाकिस्तान के बंटवारे के बाद परमात्मा के निर्देशानुसार यह संस्था राजस्थान के एकमात्र हिल स्टेशन माउण्ट आबू में स्थानांतरण हुआ। यहां छोटे से रूप में संस्था के सेवा कार्यों की शुरुआत हुई। माउण्ट आबू से ही पूरी दुनिया में ईश्वरीय निर्देशन में आध्यात्म और परमात्मा के अवतरण के आने की सूचना और विश्व परिवर्तन के कार्य का शंखनाद हुआ। संस्था का मुख्यालय माउण्ट आबू में ही है। 86 वर्ष पूर्व प्रारंभ हुई संस्था आज पूरे विश्व में एक वट वृक्ष का रूप ले चुकी है। संस्था के पूरे विश्व के 140 मुल्कों में करीब 4200 से भी ज्यादा सेवाकेन्द्र हैं। संस्थान में समर्पित रूप से 50 हजार से अधिक बहनें विश्व परिवर्तन के महान कार्य में तन-मन-धन से लगी हुई हैं।

### राजयोग से रोजाना होता है परमात्मा से संवाद-

12 लाख से ज्यादा लोग रोज आध्यात्मिक नियमों का पालन करते हुए इस मार्ग पर निरंतर आगे बढ़ते जा रहे हैं। इनके माध्यम से मनुष्यात्माओं को परमात्मा के आने की सूचना और उनसे शक्ति लेकर अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने की सेवा अनवरत जारी है। संस्था से जुड़े नियमित विद्यार्थी परमात्मा के महावाक्यों का श्रवण, मनन-चिंतन कर अपने जीवन को संवारने में जुटे हैं। साथ ही राजयोग के माध्यम से उनका परमात्मा से सीधा संवाद होता है। राजयोग और आध्यात्मिक शिक्षा द्वारा मनुष्य नर से नारायण व नारी से लक्ष्मी जैसा बनने का श्रेष्ठ कर्म कर रहे हैं।

### स्थानीय सेवाकेंद्र का पता

### पत्र व्यवहार का पता

संपादक ▸ ब्र.कु. कोमल, ब्रह्माकुमारीज मीडिया एवं पब्लिक रिलेशन, शिव आमंत्रण ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड, जिला-सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो. ▸ 9414172596, 6377090960, 9413384884
Email ▸ shivamantran@bkivv.org
▸ komal@bkivv.org

■ प्रकाशक एवं मुद्रक: ब्र.कु. करुणा द्वारा प्रकाशित एवं डीबी कॉर्प लिमिटेड जयपुर से मुद्रित ■ संपादक: ब्र.कु. कोमल ■ संयुक्त संपादक: ब्र.कु. पुष्पेन्द्र ■ RNI No.: RJHIN/2013/53539